Day :
Date :

पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटक

पाठ्यक्रम का स्वरूप धार्मिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से किया जाता है।

i) शिक्षा व्यवस्था :- शिक्षा के इतिहास से यह विदित होता है कि अतीत काल से ही शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम का गहरा सम्बन्ध रहा है। और एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। पाठ्यक्रम प्रायः लचीला तथा परिवर्तनशील रहा है। छोटे बालकों का पाठ्यक्रम अनुभव केन्द्रित रहा है। माध्यमिक स्तर विषय-केन्द्रित रहा है। शिक्षा व्यवस्था के बदलने के साथ पाठ्यक्रम का स्वरूप भी बदल जाता है।

ii) परीक्षा प्रणाली :- परीक्षा प्रणाली पाठ्यक्रम को प्रभावित करती है। निबन्धात्मक परीक्षा के पाठ्यक्रम का स्वरूप वस्तुनिष्ठ परीक्षा से बिल्कुल ही भिन्न प्रकार का होता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा में पाठ्यवस्तु के सूक्ष्म पाठ्यवस्तु पर ही प्रश्न पूछे जाते हैं, जबकि निबन्धात्मक परीक्षा में पाठ्यवस्तु के व्यापक स्वरूप पर प्रश्न पूछे जाते हैं। निबन्धात्मक परीक्षा से उच्च उद्देश्यों का मापन किया जाता है। जबकि वस्तुनिष्ठ से निम्न उद्देश्यों का ही आकलन किया जाता है।

ATUL

3. शासन पद्धति → शिक्षा द्वारा राष्ट्र तथा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। शासन प्रणाली बदलने से पाठ्यक्रम के प्रारूप का बदलना होता है। केन्द्र तथा राज्य स्तर की पार्टी को सत्ता में बदलने से भी पाठ्यक्रम के प्रारूप पर प्रभाव पड़ता है। पाठ्यक्रम के विशिष्ट प्रारूप केन्द्रीय सरकार प्रभावित करती है। रूस में शासन सत्ता बदलने से पाठ्यक्रम का प्रारूप का प्रभाव पड़ता है। पाठ्यक्रम के विशिष्ट प्रारूप केन्द्रीय सरकार प्रभावित करती है। रूस में शासन सत्ता बदलने से पाठ्यक्रम का प्रारूप बिल्कुल ही बदल गया है। भारत राज्य या प्रदेश द्वारा व्यवस्थित की जाती है। इसलिए शिक्षा का राष्ट्रीय प्रारूप नहीं है। सभी प्रदेशों के पाठ्यक्रम के प्रारूप विभिन्न स्तरों पर अलग-2 हैं।

4. अध्ययन समिति → पाठ्यक्रम के प्रारूप समितियों द्वारा किया जाता है, विभिन्न स्तरों पर अध्ययन समितियों के द्वारा पाठ्यक्रम का निर्माण तथा सुधार किया जाता है, अध्ययन समिति के सदस्यों की सूझ-बूझ तथा अनुभवों द्वारा ही पाठ्यक्रम के प्रारूप को विकसित करते हैं इसलिए इन सदस्यों की अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा मानसिक क्षमताओं का सीधा प्रभाव पड़ता है। साधारणतः अध्ययन समिति के अध्यक्ष ही पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाते हैं और बदलते हैं अन्य सदस्य मात्र अनुमोदन ही करते हैं।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day :
Date :

ATUL

5. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग तथा समितियाँ :-
शिक्षा में सुधार और विकास हेतु राष्ट्रीय स्तर आयोग तथा समितियाँ गठित की जाती है। भारत में स्वतन्त्रता के बाद से अनेक आयोग तथा समितियाँ गठित की गई। उन्होंने विश्वविद्यालय माध्यमिक तथा प्राथमिक स्तर पर सुधार के लिये सुझाव दिये और उन सुझावों को लागू करने के प्रयास किया गया। जिससे पाठ्यक्रम के प्रारूप को भी बदलना पड़ा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है। इसलिये माध्यमिक स्तर पर व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का प्रारूप विकसित किया जाता है। शिक्षा के आयोगों तथा समितियों के सुझाव के आधार पर भी पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रभावित करता है।

6. सामाजिक परिवर्तन :-
आर्थिक परिवर्तनों की गति सामाजिक परिवर्तन में से अधिक तीव्र है। इसलिये आर्थिक तथा भौतिक परिवर्तन भी पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं। विज्ञान तथा तकनीकी ने सामाजिक जीवन को अधिक प्रभावित किया है। इसलिये व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के साथ तकनीकि के प्रशिक्षण (कम्प्यूटर) आदि सम्बन्धी नये पाठ्यक्रम विकसित किये जा रहे हैं। शिक्षा के अन्तर्गत दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ है। जिसमें महत्ता तथा अवसर विद्यार्थियों को [illegible] दिया जाता है।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day :
Date :

ATUL

राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण नीति -
* क्षेत्रीय नीति
* इकोलॉजिक्स - पर्यावरण और अमी नाइरा प्रभावों

निगमन → Ex / Rule
आगमन → Rule / Exa

जॉन डीवी

जॉन डीवी का जन्म 1859 को संयुक्त राज्य अमेरिका के बर्लिंगटन (वर्मोन्ट) में हुआ था। विद्यालयी शिक्षा बर्लिंगटन के सरकारी विद्यालयों में हुआ। इसके उपरान्त उन्होंने वर्मोन्ट विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से उपाधि (पी०एच०डी०) मिली। इसके उपरांत उन्होंने मिनीसोटा विश्वविद्यालय (1888-89) मिशीगन विश्वविद्यालय (1889-94) शिकागो विश्वविद्यालय (1894-1904) में दर्शन शास्त्र पढ़ाया। 1904 में वे कोलम्बिया में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हुए।

डीवी के दर्शन →

वह मूल्यों को शाश्वत नहीं मानते। सत्यों के दार्शनिक क्षेत्र में एक कोई स्थापित नहीं है। शाश्वत सत्यों का ओत-प्रोत सकल में प्रयोगात्मक सत्य को स्थान भौतिकवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण मिलना कठिन हो रहा है। डीवी के अनुसार कोई सिद्धान्त सत्य नहीं तथा आदर्श शाश्वत सत्य नहीं रह सकता है।

marketing@atulauto.co.in | www.atulauto.co.in

Day
Date